शब्द–ब्रह्म

ISSN 2320 – 0871

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

17 मार्च 2016

न ʿ य यी मु र्यं य ʿ र्धर

राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

*प्रो.बनवारी लाल जैन

**डॉ.देवेन्द्र कुमार अग्रवाल (शोधार्थी)

*निर्देशक (विभागाध्यक्ष) शिक्षा संकाय

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय

लाडनूं, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति का स्तर क्या है ? न्यादर्श हेतु राजस्थान राज्य के चार संभागों से 8 जिले (जयपुर, दौसा, टोंक, नागौर, स.मा., करौली, कोटा एवं झालावाड़)से ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के कुल 32 राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों से 640 विद्यार्थियों (320 छात्र एवं 320 छात्राएँ) को स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। विद्यार्थियों की सृजनशीलता मापने के लिए मानकीकृत बाॅकर मेहदी द्वारा निर्मित सृजनषीलता चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण (TCW) एवं शैक्षिक निष्पत्ति मापने के लिए डॉ.ए.के.सिंह एवं ए.सेन गुप्ता द्वारा निर्मित सामान्य कक्षा-कक्ष निष्पत्ति परीक्षण (GCAT) का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं सह सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है तथा गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से उच्च हैं तथा उक्त दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनशीलता व शैक्षिक निष्पत्ति अति निम्न धनात्मक सह-सम्बन्ध है।

शिक्षा और सृजनशीलता

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। शिक्षा के विभिन्न अनुशासनों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अच्छे अवसरों को प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिताओं से गुजरना पड़ता है। छात्रों की तरह छात्राएँ भी अपने कैरियर के प्रति सजग और तत्पर दिखाई देने लगी हैं। विभिन्न प्रतियागिताओं से उन्हें जूझना पड़ता है। सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति के पैमाने पर खरा उतरना उनके लिए भी पहली आवश्यकता हो गई है। सृजनशीलता मनुष्य के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह विद्यार्थी के बहुआयामी व्यक्तितत्व की द्योतक है। अनेकों विद्यार्थी सृजनशीलता की प्रतिभा के बल पर जीवन में प्रगति पथ पर चलते हैं। विद्यालयी शिक्षा प्राप्ति के दौरान ही विद्यार्थियों को सृजनशीलता के विकास के अवसर प्राप्त होते है। यह मनुष्य की प्रतिभा व अंतरंग भावनाओं का इजहार करती है। जिससे बालक की विद्यालयी विषयों में शैक्षिक निष्पत्ति उच्च होती है। या निम्न होती है। अब सवाल उठता है कि सृजनशीलता या सृजनात्मकता एवं शैक्षिक निष्पत्ति क्या है ?

शब्द–ब्रह्म

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

ISSN 2320 – 0871

17 मार्च 2016

न ॅ य यी मु र्फ्न य ॅ र्धर

पहले हम सृजनशीलता के अर्थ को स्पष्ट करते [illegible] क्रियेटिविटी से बना है। हिन्दी इस शब्द के समान्तर अर्थ उत्पाद रचना, रचनामत्मकता सृजन, निर्माण करना शब्द बताये गये हैं अथवा अथवा प्रयुक्त होते है। सृजन वह अवधारणा है जिसमें उपलब्ध साधनों से नवीन वस्तु, विचार, अवधारणा, उत्पादन को जन्म दिया जाता है। सृजनात्मकता ज्ञान, सूचना तथा सिद्वान्तों का प्रतिपादन, सूचना निर्माण, नवीन प्रणालियों तथा इन सबकी अभिव्यक्ति सृजनात्मकता के अन्तर्गत आती है।

वर्तमान में जहाँ व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन के जीवन में वैयक्तिक भिन्नताएँ दृष्टिगोचर हो रही है। आज हर व्यक्ति में सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, शैक्षिक, चारित्रिक, भौगोलिक, लैंगिक आदि विभिन्नताएँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है। ये विभिन्नताएँ बालक में शैशवावस्था से ही दृष्टिगत होती है, लेकिन धीरे-धीरे ये विभिन्नताएँ बाल्यावस्था तक दृढ एवं स्पष्ट हो जाती है। इसलिए वह हर क्षेत्र में अलग-अलग प्रकार की निष्पत्ति या उपलब्धि प्राप्त करता है। उपलब्धि या निष्पत्ति से तात्पर्य है कि जब बालक विद्यालयी विषयों जैसे गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, हिन्दी या अंग्रेजी आदि में ज्ञान प्राप्त करता है या कौशल का विकास करता है। इसका आकलन एक शैक्षिक वर्ष में परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर शिक्षकों द्वारा करायी गयी शैक्षिक क्रियाओं के आधार पर या दोनों माध्यमों से किया जाता है। उसे शैक्षिक निष्पत्ति या उपलब्धि कहते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरवलोकन

प्रस्तुत विषय में अग्रवाल, कान्ता प्रसाद (1988) ने अध्ययन में पाया कि सभी प्रकार के विद्यार्थियों के शाब्दिक, अशाब्दिक एवं पूर्ण [illegible]

शब्द—ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
न ` य यी मु र्या य ` र्धर

शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है।

न्यादर्श : न्यादर्श हेतु राजस्थान राज्य के चार संभागों से 8 जिले (जयपुर, दौसा, टोंक, नागौर, स.मा.,करौली,कोटा एवं झालावाड़) से ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के कुल 32 राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों से 640 विद्यार्थियों (320 छात्र एवं 320 छात्राएँ) को स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया।

ईन य : विद्यार्थियों कि सृजनशीलता मापने के लिए मानकीकृत बाकर मेहदी द्वारा निर्मित सृजनशीलता चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण (TCW) एवं शैक्षिक निष्पत्ति मापने के लिए डॉ.ए.के.सिंह एवं ए.सेन गुप्ता द्वारा निर्मित सामान्य कक्षा-कक्ष निष्पत्ति परीक्षण (GCAT) का प्रयोग किया गया।

ँक्मि र्धं दम ँ : प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रांन्तिक अनुपात एवं सह सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया।

न य ँ ध : प्रदत्तों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त परिणामों को निम्नांकित तालिका 1, 2व 3 में दर्शाया गया है।

ण र ँक्म 1

य म ँ `य य म म र म म र्तम

ॣ धवा र ण फरि ध ण ` थ़ममध यध ।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अंतर	क्रान्तिक अनुपात
रा.वि.के विद्यार्थी	320	69.21	24.38	14.14	7.31
गैर रा.वि. के विद्यार्थी	320	83.35	24.53		

मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के लिए निकाला गया क्रान्तिक अनुपात का मान 7.31 पाया गया है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम मान 1.96 और 0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम मान 2.58 हैं। तथा सार्थकता के दोनो मानों से क्रान्तिक अनुपात का मान अधिक है अतः दोनों समूहों में संाख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अर्थात् पूर्व वर्णित परिकल्पना में राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनषीलता में सार्थक अन्तर है, इसलिए परिकल्पना असत्यापित हुई।

ण र ँक्म 2

राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शैक्षिक निष्पत्ति का विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अंतर	क्रान्तिक अनुपात
रा.वि. के विद्यार्थी	320	48.12	16.72	9.01	6.68
गैर रा.वि. के विद्यार्थी	320	57.13	17.37		

मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के लिए निकाला गया क्रान्तिक अनुपात का मान 6.68 पाया गया है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम मान 1.96 और 0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम मान 2.58 हैं। तथा सार्थकता के दोनो मानों से क्रान्तिक अनुपात का मान अधिक है। अतः दोनों समूहों में संाख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अर्थात् पूर्व वर्णित परिकल्पना में राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पŸिा में सार्थक अन्तर है, इसलिए परिकल्पना असत्यापित हुई।

ण र ँक्म 3

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2016
न ' य यी मु र्फ़ य ' र्धर

य म ँ `य य म म र म ँ ' थ़ममधयण म र्तम ्धवा र ण ँ वे ह धिश्नण्णि ँ र्त स फ्द्द धसीँ सो

सहसंबन्धी परिणाम का विश्लेषण

ुस	ँक्म	स फ्द्द ि ँ ़	ँफ्द्द
रा.एवं गैर रा. विद्यालयों में अध्य. विद्या.की सृजनषीलता में सह-सम्बन्ध	(N=640)	0.08	धनात्मक सहसम्बन्ध
रा.एवं गैर रा. विद्यालयों में अध्य. विद्या.की शैक्षिक निष्पत्ति में सह-सम्बन्ध	(N=640)	0.12	धनात्मक सहसम्बन्ध

1. राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता के मध्य 0.08 सहसंबंध पाया गया है जो कि धनात्मक सहसंबंध है।

2. राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य 0.12 सहसंबंध पाया गया है जो कि धनात्मक सहसंबंध है। सहसम्बन्ध के परिणाम दर्शाते हैं कि पूर्व वर्णित परिकल्पना कि राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य धनात्मक सहसंबंध सत्यापित हुआ।

निष्कर्ष एवं कारण

इसका प्रमुख कारण है कि आज राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों में सृजनात्मक एवं शैक्षिक निष्पत्ति का विकास समान रूप से करता है। लेकिन वर्तमान में शिक्षण कौशलों एवं दक्षता द्वारा सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति में असमानता दृष्टिगोचर हो रही है। चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, लैंगिक, श्रेणीगत या फिर परिवेशगत जैसा कि समाचार पत्र-पत्रिका द्वारा सूचना प्रकाशित व प्रसारित हो रही हो या चाहे टेलीविजन रेडियो द्वारा हो रही हो। हमें उक्त स्तरों पर सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति में भिन्नता दृष्टिगोचर अवश्य हो रही है। जिसके उत्तरोत्तर विकास के लिए हम सब की जिम्मेदारी है कि हम बालक की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति के गुणोत्तर विकास में सहभागिता निभाये।

शैक्षिक निहितार्थ

आज भारत में सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति की महत्ती आवश्यकता है। वर्तमान समय में इस क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थाओं के द्वारा शिक्षा में संचेतना लाई जा सकती है। शिक्षा के द्वारा सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति का प्रसार सम्भव है।

शोधार्थी द्वारा किये गए शोध की सार्थकता तभी है जब शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सभी बुद्धिजीवी, अध्यापक एवं समाज के सभी सदस्य उक्त शोध के निष्कर्षों एवं सुझावों का उपयोग कर शिक्षा के क्षेत्र में सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति को व्यावहारिकता प्रदान करने में अपना योगदान दे।

संदर्भ ग्रंथ

1. पारीक, ममता (2003): बोध शिक्षा समिति एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन। पीएच.डी. शिक्षा, जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय।

2. पल्लवी एवं शुक्ला, संतोष (2006). उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर वातावरण में भिन्नता तथा लिंग के प्रभाव का अध्ययन ! शिक्षा चिन्तन, कानपुर: त्रिमूर्ति संस्थान, वर्ष 5 अंक 19 पेज 33-36.

3. प्रसाद, ठाकुर (2008): विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा चिन्तन, कानपुर: त्रिमूर्ति संस्थान, वो -28 (8) पृ. 36-38.

4. वर्मा, रामकुमार, (2005) सृजनात्मक कौशलों का शिक्षण में उपयोग, भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. (23) पृ. 57-71.

5. पुरोहित, राजेश कुमार (2007). सृजनात्मकता क्या है ? काठल शतपत्र 4 (4) पृ. 11-14.

6. जैन, पारस चन्द (2008). विद्यालय की समस्याएं एवं समाधान, शिविरा पत्रिका वर्ष 49 अंक 5 पृ. 14-15.

7. जैसवार, प्रीति एवं कुमार, दिनेश (2009). प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी दशाओं के प्रभाव का अध्ययन, शिक्षा चिन्तन, कानपुर: त्रिमूर्ति संस्थान, अंक 29 वर्ष 08 पृ. 7-13.